



तिरुच्चि दर्पण

अंक /இதழ்/ISSUE: 4

जनवरी /ஜனவரி /January2021

2021

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन, तिरुच्चिरापल्लि
नं1 विल्लियम्स रोड, कन्टोनमेंट, तिरुच्चिरापल्लि 620001
CHIEF COMMISSIONER OF CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE
NO.1 WILLIAMS ROAD, CANTONMENT, TIRUCHIRAPPALLI 620001



तिरुच्चि दर्पण

TIRUCHY DARPAN திருச்சி தா்பண்

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 4
2021 जनवरी

இதழ்-4
2021 जनवरी

ISSUE :4
2021 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு -
திருவள்ளூவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार ।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार ॥

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद - मु. गो. वेंकटकृष्णन)

प्रधान संपादक

डॉ. उमा शंकर
मुख्य आयुक्त
सीमा शुल्क (निवारक) जोन तिरुच्चिराप्पल्लि

Editor-in-Chief

Dr. Uma Shanker
Chief Commissioner
Customs (Preventive) Zone Tiruchirappalli

प्रबंध संपादक

श्री डी. अनिल
आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि
श्री दिनेश के. चक्रवर्ती
आयुक्त,
सीमा शुल्क गृह तूत्तुकुडि

Managing Editors

Shri D. Anil
Commissioner,
Customs (Preventive) Trichy
Shri Dinesh K. Chakravarthy
Commissioner,
Custom House, Tuticorin

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

डॉ उमा शंकर
डी. अनिल
दिनेश के चक्रवर्ती
जे. मुहम्मद नवफल

मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिरापल्लि
आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिरापल्लि
आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुकुडि
अपर आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिरापल्लि

प्रधान संपादक
प्रबंध संपादक
प्रबंध संपादक
संपादक

भाषा संपादक

एम. राजराजेश्वरी
हिन्दी
देवेन्द्र सिंह सिकरवार
तमिल
एस. ज्ञानषण्मुखम,
अंग्रेजी
एन. सत्यनारायणन

सहायक निदेशक (रा.भा.), मु आ कार्यालय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मु आ कार्यालय
अधीक्षक, सीमा शुल्क मुख्यालय,
अधीक्षक मु आ कार्यालय

संपादन सहयोग

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Dr. Uma Shanker
D. Anil
Dinesh K. Chakravarthy
J.MD.Navfal

Chief Commissioner, Customs (Preventive)
Commissioner, Customs (Preventive)
Commissioner, Customs House Tuticorin
Additional Commissioner, CC(P) Office

Editor-in-Chief
Managing Editor
Managing Editor
Managing Editor

Language Editors

M. Rajarajeswari

Assistant Director (O.L), CC Office Trichy

Editorial Assistance

Hindi

Devendra Singh Sikarwar

Junior Translation Officer, CC Office Trichy

Tamil

S. Gnanashanmugam,

Superintendent, Customs Hqrs., Trichy

English

N.Sathyanarayanan

Superintendent CC Office Trichy

The articles appearing in Tiruchchy Darpan do not necessarily reflect the view of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statement rests with the authors.

संदेश



सत्यमेव जयते

AJAY JAIN

SPECIAL SECRETARY & MEMBER



भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय/राजस्व विभाग
MINISTRY OF FINANCE / DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF INDIRECT TAXES & CUSTOMS
नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-110001
NORTH BLOCK, NEW DELHI-110001
Tel. No. +91-11-23092628, Fax No. : +91-11-23092346
E-mail : memcxlegal.cbic@nic.in

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन, द्वारा "तिरुच्चि दर्पण" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। हिन्दीतर क्षेत्र में विभागीय त्रिभाषी पत्रिका का सतत प्रकाशन राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है साथ ही क्षेत्रीय भाषा की अभिवृद्धि में भी सहायक है। पत्रिका का प्रकाशन, रचयिताओं के भाषाई ज्ञान का द्योतक होता है तथा पाठकों में भाषा के प्रति रुचि पैदा करता है। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

अजय जैन

(अजय जैन)

सदस्य, दक्षिण जोन



प्रधान संपादक की कलम से.....

"तिरुच्चि दर्पण" के चतुर्थ अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे सुखद अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए ई-पत्रिका का प्रकाशन एक बेहतर विकल्प है। संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए यह आवश्यक है कि सरकारी काम-काज मूल रूप से हिन्दी में करने पर ध्यान दिया जाए। पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में बढ़ाया गया एक कदम है। विभागीय पत्रिका विभाग में कार्यरत लोगों के अंदर छिपी रचनात्मक कला को लोगों तक पहुँचाने का काम करती है। छोटे-मोटे लेखक की पहुँच स्थापित पत्र-पत्रिका तक नहीं हो सकती इसलिए विभागीय पत्रिका ऐसे उदीयमान लेखकों एवं कलाकारों को एक प्लेटफॉर्म प्रदान करती है ताकि उन्हें पहचान एवं अभिव्यक्ति का माध्यम मिल सके।

पत्रिका के संपादक मंडल, पत्रिका के सृजन से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका से संबंधित सुझावों का स्वागत है।

(डॉ. उमा शंकर)

मुख्य आयुक्त



प्रबंध संपादक की कलम से.....

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन की विभागीय पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के भारत सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अनुसरण में विभागीय पत्रिका को ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह प्रयास और अधिक पाठकों तक पहुँचने में भी सहायक होगा जिससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में बढ़ोत्तरी होगी।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिका का विशेष महत्व होता है। इसके माध्यम से अधिकारियों एवं उनके परिजनों को न केवल अपनी प्रतिभा दर्शाने का मौका मिलता है अपितु उनके भाषाई ज्ञान में भी वृद्धि होती है। साथ ही राजभाषा संबंधी जानकारी भी बढ़ती है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(डी. अनिल)

आयुक्त

सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि



प्रबंध संपादक की कलम से.....

यह सचमुच खुशी की बात है कि तिरुच्चिरापपल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन की विभागीय पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के चौथे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। "तिरुच्चि दर्पण" सीमा शुल्क तिरुच्चि एवं तूत्तुकुडि के अधिकारियों एवं उनके परिजनों को रचनाएँ प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करती है तथा ऐसे कार्मिक जिनके पास सृजनात्मक लेखन क्षमता है, उनको अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर प्रदान करती हैं। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी एवं तमिल रचनाओं का समावेश होता है। यह आयुक्तालय राजभाषा के समुचित प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। "तिरुच्चि दर्पण" का प्रकाशन इसी दिशा में बढ़ाया हुआ एक कदम है।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी स्टाफ को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

के. दिनेश. चक्रवर्ती

(दिनेश के. चक्रवर्ती)

आयुक्त,

सीमा शुल्क गृह तूत्तुकुडि



संपादक की कलम से

"तिरुच्चि दर्पण" के प्रकाशन से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका का चौथा अंक है। इसे ई- पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है ताकि इसे अधिक से अधिक लोगों तक आसानी से पहुँचाया जा सके। पत्रिका में, कविता, निबंध, कहानी, संकलित सामग्री का हिंदी अनुवाद, बच्चों की चित्रकारी के साथ साथ विभागीय क्रिया-कलाप को दर्शानेवाले छाया-चित्रों का भी समावेश किया गया है ताकि पत्रिका को यथासंभव आकर्षक एवं सूचनाप्रद बनाया जा सके। आशा है यह अंक भी पाठकों को पसंद आएगा। कृपया अपने सुझावों से अवगत कराएं।

पत्रिका के सृजन में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को मैं बधाई देता हूँ।


(जे. मुहम्मद नवफल)
अपर आयुक्त (मुआका)
तिरुच्चि



डॉ. उमा शंकर
मुख्य आयुक्त

बिहार के पकवान / पीकारिन् त्तिन्पण्डाङ्कन्

देश की माटी की सोंधी महक और देशी घी की खुशबू में रचे बसे कुछ पकवानों के बारे में मैं बताना चाहूँगा। वैसे तो आजकल सभी पकवान सभी जगह आसानी से मिल जाते हैं। जैसे दक्षिण भारत की इडली भारत के सभी प्रांतों में खाने के लिए मिल जाती है इसी प्रकार गुजरात का ढोकला भी भारत के हर क्षेत्र में मिलता है किन्तु मैं कुछ ऐसे पकवानों के बारे में बताना चाहता हूँ जिनमें अपने प्रांत की मिट्टी की खुशबू आती है और यह पकवान अभी तक गुमनामी में रहे हैं। इनमें से मुख्य हैं बिहार का लिट्टी चोखा एवं ठेकुआ (Cookies)।

लिट्टी चोखा बिहार का स्वदिष्ट पारम्परिक भोजन है इसे आप लंच, डिनर या छुट्टी के दिनों में बना कर खा सकते हैं। लिट्टी के अंदर सत्तू और कुछ विशेष मसाले भरे जाते हैं और इसे बैंगन के चोखे या घी के साथ परोसा जाता है। ऐसे तो यह गरीबों का मुख्य भोजन माना जाता था लेकिन कालांतर में इसमें ऐसी सामग्री शामिल की गई जिसने इसे ज्यादा स्वादिष्ट बनाने एवं अभिजात्य वर्ग में पैठ पहुँचाने का भी काम किया। ज्यादातर यह जाड़े के दिनों में बड़े चाव से खाया जाता है। इसे गेहूँ के आटे में चना के सत्तू (भूने चने का पाउडर) में विशेष मसाला आदि मिलाकर लकड़ी या उपले की आग में पकाया जाता है।

நம் மண்ணின் இனிமையான மணம் மற்றும் நாட்டு நெய்யின் நறுமணத்தால் உருவாக்கப்பட்ட சில சுவையான உணவுகளைப் பற்றி நான் உங்களுக்கு சொல்ல விரும்புகிறேன். இப்பொழுதெல்லாம் எல்லா உணவுகளும் எல்லா இடங்களிலும் எளிதாகக் கிடைக்கின்றன. இந்தியாவின் அனைத்து ராகாணங்களிலும் தென்னிந்தியாவின் இட்லி கிடைப்பதைப் போல, குஜராத்தின் டோக்லாவும் இந்தியாவின் ஒவ்வொரு பிராந்தியத்திலும் கிடைக்கிறது, ஆனால் நான் எனது மாகாணத்தின் மண்ணின் மணம் நிரம்பிய ஆனால் பலராலும் அறியப்படாத சில உணவுகள் பற்றி சொல்ல விரும்புகிறேன். இவற்றில் முதன்மையானது பீகாரின் லிட்டி சோகா மற்றும் டேக்குவா (Cookies).

லிட்டி சோகா பீகாரின் சுவையான பாரம்பரிய உணவாகும். இதை நீங்கள் மதிய உணவு வேளையில், இரவு உணவு வேளையில் அல்லது விடுமுறை நாட்களில் தயாரித்து உண்ணலாம். 'சத்து' மற்றும் சில சிறப்பு மசாலாப் பொருட்கள் லிட்டிக்குள் நிரப்பப்பட்டு, அது கத்திரிக்காய் சோக்கா அல்லது நெய்யுடன் பரிமாறப்படுகிறது. இந்த முறையில், இது ஏழைகளின் பிரதான உணவாகக் கருதப்பட்டது, ஆனால் காலப்போக்கில் மேலும் சில பொருட்கள் இதில் சேர்க்கப்பட்டதால் இது அதிக சுவையானதாக ஆகி, உயரடுக்கினருக்குள் ஊடுருவவும் தொடங்கியது. பெரும்பாலும் இது குளிர்காலத்தில் மிகுந்த ஆர்வத்துடன் உண்ணப்படுகிறது. இது கோதுமை மாவில் குறிப்பாக கொண்டைக்கடலை சத்துவில் (வறுத்த கொண்டைக்கடலைத் தூள்) மசாலா போன்றவை சேர்க்கப்பட்டு மரம் அல்லது வரட்டி அடுப்பு போன்றவற்றில் தீயில் சமைக்கப்படுகிறது. இன்று நவீன வீடுகளில் நெருப்பு மூட்ட வசதி இல்லாததால் இல்லத்தரசிகள் மின்சார அடுப்பிலும் (எலெக்ட்ரிக் அவன்) இதனை சமைக்கிறார்கள். பின்னர் அது நெய் நிரப்பப்பட்ட கிண்ணத்தில் மூழ்குமாறு வைக்கப்படுகிறது. பிறகு (உத்தரபிரதேசத்தில் பர்தா என்றும் அழைக்கப்படும்) சோக்காவுடன் உண்ணப்படுகிறது. சோக்கா தயாரிக்க, உருளைக்கிழங்கு, கத்திரிக்காய் மற்றும் தக்காளி

आज कल मॉडर्न घरों में आग जलाने की सुविधा नहीं होने पर गृहणियाँ इलैक्ट्रिक अवन में भी बनाती हैं। फिर इसे घी से भरे कटोरे में डुबा दिया जाता है। फिर चोखा जिसे उत्तर प्रदेश में भरता भी कहते हैं, के साथ खाया जाता है। चोखा को बनाने के लिए आलू, बैंगन एवं टमाटर को लकड़ी / उपलों की आँच में भून कर पकाकर बनाते हैं। इससे इसमें एक विशेष प्रकार की सौंधी खुशबू आती है एवं खाने का स्वाद भी अलग हो जाता है। फिर इसमें आग में पका लहसुन, हरी मिर्च एवं सरसों का तेल डालते हैं जिससे स्वाद में और भी बढ़ोत्तरी हो जाती है। जो मांसाहारी हैं वे भूने गोस्त के साथ भी इस व्यंजन का लुप्त उठा सकते हैं।

जाड़े के दिनों में, कड़क ठंड के दिनों में गरम गरम लिट्टी चोखा खाने का अपना अलग मजा है। आज यह व्यंजन पूरे उत्तर-भारत एवं पश्चिम-भारत में लोकप्रिय हो गया है। इसी का मिलता जुलता पकवान दाल-बाटी है जो राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है।

इसी तरह से एक और अनोखा व्यंजन है जिसे हम ठेकुआ कहते हैं। अंग्रेजी में इसे हम कुकीज भी कह सकते हैं। एक दम खालिस देशी मिठाई है। यह विश्व प्रसिद्ध छठ पर्व (सूर्य उपासना पर्व) का मुख्य प्रसाद है। यह गेंहूँ के आटा में घी, ड्राई फ्रूट्स, चीनी / गुड़ डालकर गूंधते हैं फिर एक गोल आकार के साँचे में दबाकर आकार देते हैं। फिर घी में तलते हैं। यह बहुत कुरकुरा, खास्ता एवं स्वादिष्ट होता है। इसमें भी अपने देश की मिट्टी की खुशबू आती है एवं सारी सामग्री देशी होती है। बच्चे जब घर से स्कूल/कॉलेजों के हॉस्टल जाते हैं तो माताएं अकसर ऐसे पकवान देकर भेजती हैं। मेरी माँ भी मुझे डब्बा भर-भर कर ठेकुआ देती थी जो मेरे आई.आई.टी. के दोस्तों में बहुत प्रचलित था और दोस्त लोग इसके इंतजार में रहते थे। आप सब लोग भी इसके बनाने की विधि इंटरनेट पर देख कर ट्राई कर सकते हैं और शानदार पकवान का लुप्त उठा सकते हैं।

ஆகியவற்றை மர / வரட்டி அடுப்பு தீயில் வறுத்து சமைப்பார்கள். இதன் காரணமாக, அதில் ஒரு சிறப்புவாசனை வருகிறது மற்றும் உணவின் சுவையும் அலாதியாகிறது. பின்னர் தீயில் சமைத்த பூண்டு, பச்சை மிளகாய் மற்றும் கடுகு எண்ணெய் சேர்ப்பார்கள், இதனால் சுவை இன்னும் அதிகரிக்கும். அசைவ உணவு உண்பவர்கள் வறுத்த மாட்டிறைச்சியுடன் சேர்த்து இந்த உணவை உண்டு அனுபவிக்கலாம்.

குளிர்காலத்திலும் மற்றும் பனிக்காலத்திலும் சூடான விட்டி சோக்காவை சாப்பிடுவது ஒரு தனி சுகமாகும். இன்று இந்த உணவு வட இந்தியா மற்றும் மேற்கு இந்தியா முழுவதும் பிரபலமாகி விட்டது. ராஜஸ்தானில் மிகவும் பிரபலமான 'தால்-பாட்டி' இது போன்ற ஒரு உணவுப் பண்டம் ஆகும்.

இதேபோல், டேக்குவா என்று அழைக்கப்படும் மற்றொரு தனித்துவமான உணவு உள்ளது. ஆங்கிலத்தில், இதை நாம் குக்கீஸ் என்று அழைக்கலாம். இது முற்றிலும் சுத்தமான நம் நாட்டு இனிப்பாகும். இது உலகப் புகழ்பெற்ற சட் விழாவின் (சூர்ய உபாசன பர்வா) முக்கிய பிரசாதமாகும். கோதுமை மாவில் நெய், உலர்ந்த பழங்கள், சர்க்கரை / வெல்லம் ஆகியவற்றைச் சேர்த்து பிசைந்து, பின்னர் வட்ட வடிவ அச்சில் அழுத்தி வட்டமான வடிவம் கொடுப்பார்கள். பின்னர் நெய்யில் பொரித்து எடுப்பார்கள். இது மிகவும் கரகரப்பாக, மொருமொருப்பாக மற்றும் சுவையாக இருக்கும். இது நம் நாட்டிற்கே உரிய மண்ணின் வாசனையுடன் இருக்கும். உபயோகிக்கப்படும் அனைத்து பொருட்களும் நம் நாட்டு பொருட்களே. குழந்தைகள் வீட்டிலிருந்து பள்ளி / கல்லூரி விடுதிகளுக்குச் செல்லும்போது, தாய்மார்கள் பெரும்பாலும் இது போன்ற பண்டங்களை கொடுத்து அனுப்புவார்கள். என் அம்மாவும் ஒரு டப்பா நிறைய டேக்குவா செய்து கொடுத்து அனுப்புவார்கள். இது என்னுடைய ஐ.ஐ.டி. நண்பர்கள் மத்தியில் மிகவும் பிரபலமாக இருந்தது. அவர்கள் இதனை ஆவலுடன் எதிர்பார்த்து காத்திருப்பார்கள். நீங்கள் அனைவரும் இணையதளத்தில் இதன் செய்முறையை பார்த்து முயற்சி செய்து ஒரு சிறந்த தின்பண்டத்தை உண்டு மகிழலாம்.

तमिल में अनूदित

एम. राजराजेश्वरी, सहायक निदेशक(रा.भा.)



திருக்குறள் திருவகூரல்

मु.गो. वैंकटकृष्णान, एम.ए. अवकाशप्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कॉलेज कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथ का दोहा छंद में अनुवाद किया है। तमिल मूल तथा नागरी लिपि में अनुवाद किए तिरुवकुरल का अध्याय 4 नीचे प्रस्तुत है

அதிகாரம்-4 அறன் வலியுறுத்தல்

अध्याय-4 धर्म पर आग्रह

சிறப்புஈனும் செல்வமும் ஈனும் அறத்தினூஉங்கு
ஆக்கம் எவனோ உயிர்க்கு.

मोक्षप्रद तो धर्म है, धन दे वही अमेय।
उससे बढ़कर जीव को , है क्या कोई श्रेय।।

அறத்தினூஉங்கு ஆக்கமும் இல்லை அதனை
மறத்தலின் ஊங்கில்லை கேடு.

बढ़कर कहीं सुधर्म से, अन्य न कुछ भी श्रेय।
भूला तो उससे बड़ा, और न कुछ अश्रेय।।

ஓல்லும் வகையான் அறவினை ஓவாதே
செல்லும்வா யெல்லாஞ் செயல்.

यथाशक्ति करना सदा, धर्मयुक्त ही कर्म।
तन से मन से वचन से, सर्व रीति से धर्म।।

மனத்துக்கண் மாசிலன் ஆதல் அனைத்துஅறன்
ஆகுல நீர பிற.

मन का होना मल रहित, इतना ही है धर्म।
बाकी सब केवल रहे, ठाट-बाट के कर्म।।

அழுக்காறு அவாவெகுளி இன்னாச்சொல் நான்கும்
இழுக்கா இயன்றது அறம்.

क्रोध लोभ फिर कटुवचन, और जलन ये चार।
इनसे बच कर जो हुआ, वही धर्म का सार।।

அன்றறிவாம் என்னாது அறஞ்செய்க மற்றது
பொன்றுங்கால் பொன்றாத் துணை.

बाद करें मरते समय, सोच न यों, कर धर्म।
जान जाय जब छोड़ तन, चिर संगी है धर्म।।

அறத்தாறு இதுவென வேண்டா சிவிகை
பொறுத்தானோடு ஊர்ந்தான் இடை.

धर्म कर्म के सुफल का, क्या चाहिए प्रमाण।
शिवकारूढ़ कहार के, अंतर से तू जान।।

வீழ்நாள் படாஅமை நன்றாற்றின் அஃதொருவன்
வாழ்நாள் வழியடைக்குங் கல்.

बिना गँवाए व्यर्थ दिन, खूब करो यदि धर्म।
जन्म-मार्ग को रोकता, शिलारूप वह धर्म।।

அறத்தான் வருவதே இன்பம்மற் றெல்லாம்
புறத்த புகழும் இல.

धर्म-कर्म से जो हुआ, वही सही सुख-लाभ।
अन्य कर्म से सुख नहीं, न तो कीर्ति का लाभ।।

செயற்பால தோரும் அறனே ஒருவற்கு
உயற்பால தோரும் பழி.

करने योग्य मनुष्य के, धर्म-कर्म ही मान।
निन्दनीय जो कर्म है, वर्जनीय ही जान।।



बीते हुए पल

बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।
सपने सुहाने रैन के,
जगते ही गुजर जाते।
कुछ सुखद, सुंदर, सौम्य-सा
अहसास छोड़ जाते,
ऐसे ही जागृत जगत के
सब पल हैं गुजर जाते।
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

वो रोज-रोज स्कूल जाना,
यारों के संग बैठ, हँसना-हँसाना,
वह प्रेम निश्चल परस्पर,
हम भूल नहीं पाते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

गर, झलक मिलती मित्र की,
लगता था मंजिल मिल गई।
अब राह चलते रात-दिन,
दिखती नहीं मंजिल कहीं।
तनहाइयों में बेबस से,
यही गुनगुनाते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

यूँ तो कमाते खूब,
खर्चा भी करते खूब हैं,
मगर गुल्लक बालपन की,
यादों में मौजूद है।
देती थी गुल्लक जो खुशी,
वह आज नहीं पाते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।



प्रेम कुमार मीना, अधीक्षक

माना लगाती है गले से,
आज भी दुनिया मुझे,
बूझती है, मानती है,
आज भी दुनियाँ मुझे,
मगर बेमतलब बचपन की तरह,
लोग गोदी नहीं उठाते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

क्या दिन थे बेबाक! मालूम न थी दुनियादारी,
बढ़ते-बढ़ते उम्र,
बढ़ गई जिम्मेदारी,
आज हमारे मित्र भी नहीं मिलने आते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

बहला लेता हूँ मन को,
कुछ यादों में डूबकर,
जानता हूँ, वक्त गुजरा,
आता नहीं है लौटकर,
फिर भी गुजारे वक्त को,
हम भूल नहीं पाते,
बीते हुए पल जिंदगी के, वापस नहीं आते।।

डॉ. उमा शंकर, मुख्य आयुक्त द्वारा
पाण्डिचेरी, सीमा शुल्क निवारक (एकक) का निरीक्षण



डॉ. उमा शंकर, मुख्य आयुक्त द्वारा
पाण्डिचेरी, सीमा शुल्क निवारक (एकक) में वृक्षारोपण





सतवीर कर सहायक
सीमा शुल्क गृह तूत्तुकुडि



गुरुजन जो कुछ कह जाते हैं,
तुम उसे भुलाओगे कब तक।।
देखना यही है इस जग में,
तुम चैन मनाओगे कब तक।।
अगणित अभिमानी चले गए,
माया ममता से छले गए।।
वे ले न गए कौड़ी संग में,
तुम लोभ बढ़ाओगे कब तक।।
जो गया न अब वह आएगा,
जो है वह निश्चित जाएगा।।
जब कोई सदा नहीं रह सकता,
तब तुम रह पाओगे कब तक।।
जिसको गाकर रोना होता,
जिसको पाकर खोना होता।।
उस नश्वर वैभव सुख के तुम,
यह गीत सुनाओगे कब तक।।
मिलती है परम शांति जिससे
मिटती है दुखद भ्रांति जिससे।।
ऐ पथिक उसी परमेश्वर की,
तुम शरण न आओगे कब तक।।

संत पथिकजी (संकलित)

"आश मिलन की"

है वक्त बुरा और राह कठिन,
इस सावन में मिलनहीं पाएंगे।
तुम करो न मन उदास प्रिये,
जल्दी ही मिलने आएंगे।।

अधीर हृदय और बेचेन नयन हैं
इस सावन में मिल नहीं पाएंगे।
तुम धरो हृदय में धीर प्रिये
जल्दी ही मिलने आएंगे।।

तुम मजबूर वहाँ मैं दूर यहाँ
इस सावन में मिल नहीं पाएंगे।
ये रखो मन में आश प्रिये,
बुझेगी मिलने की प्यास प्रिये।
जल्दी ही मिलने आएंगे।।

मेरी चाह वहाँ, मेरा काम यहाँ
इस सावन में मिल नहीं पाएंगे।
मगर होती है जहाँ पर चाह प्रिये
मिलती है वहाँ पर राह प्रिये
जल्दी ही मिलने आएंगे।।



सतीश कुमार पांडेय

भाई श्री आनंद कुमार पांडेय
कर सहायक



रानी लक्ष्मीबाई



रण में जो कभी न हुई भयभीत ।
देख के रणकौशल उसका शत्रु हुए अचम्बित ।
शस्त्र ज्ञान हो रहा था हर क्षण विस्तृत ।
फिरंगियों के सभी अरमान सदा करती खंडित ।
भारतीय नारीत्व के प्रताप से सम्पूर्ण धरा हुयी चमत्कृत ।
उसके गगनभेदी हंकार से रणभूभि हो उठी प्रकम्पित ।
अदम्य साहस के समक्ष
दुश्मनों का मन, हो उठा व्यथित ।
न बाँध सका मोह पाश में उसे राज दरबार ।
दामिनी सा रूप धरे चलती रही तलवार ।
पाँव न पीछे हटा, भले बहती रही रक्त की धार ।
आखिरी साँस तक मचाती रही
शत्रु खेमों में चीख-चीत्कार ।
लहू के आखिरी कतरे तक करती रही
मातृभूमि की जय-जयकार ।
उसके स्वर्णिम दास्तान को सदा वन्दन करेगा संसार ।
लाखों दुष्टों का एक बेटी कर सकती है संहार ।
जुल्म मर्दन हेतु ऐसी बेटी जन्मे हर बार ।
आज फिर मातृभूमि चाहती ऐसे पहरेदार ।
वीर वीरांगना को हमारा, वन्दन है बारंबार ।
धन्य ये धरा है जिसकी महिमा रही सदा अपरंपार ।

दीया

मैं दीया हूँ तम को मिटाता हूँ ।
भटके राही को, राह दिखाता हूँ ।
तूफानों में भी हौसले बुलंद कर डट जाता हूँ ।
खुद के लिए नहीं बचाता कुछ भी,
सर्वस्व न्योछावर कर जाता हूँ ।
त्याग-समर्पण का भाव जगाता हूँ ।
एक दूजे से होकर प्रज्वलित,
एकता की मशाल बन जाता हूँ ।
जो बंधे है अंधेरो के आगोश में,
उन्हें भी बन्धन मुक्त कर जाता हूँ ।
सूर्य की पहली किरण आने तक,
मैं टिमटिमाता हूँ ।
मानवी संस्कारों में, मैं साक्षी बन जाता हूँ ।
जल के प्रवाह में भी,
मैं तैरता आगे निकल जाता हूँ ।
हर क्षण, मैं प्रसन्नता का पाठ पढ़ाता हूँ ।
कभी-कभी होकर कतार बद्ध,
देवों के वन्दन में काम आता हूँ ।
मैं दीया हूँ सदा मुस्कराता हूँ,
सदा खिलखिलाता हूँ,
अंधकार, अज्ञान को जलाता हूँ ।
खुद को मिटा, धरा को जगमगाता हूँ ।
प्रेम, स्नेह, एकता का मिसाल बन जाता हूँ ।
मैं दीया हूँ तम को मिटाता हूँ ।



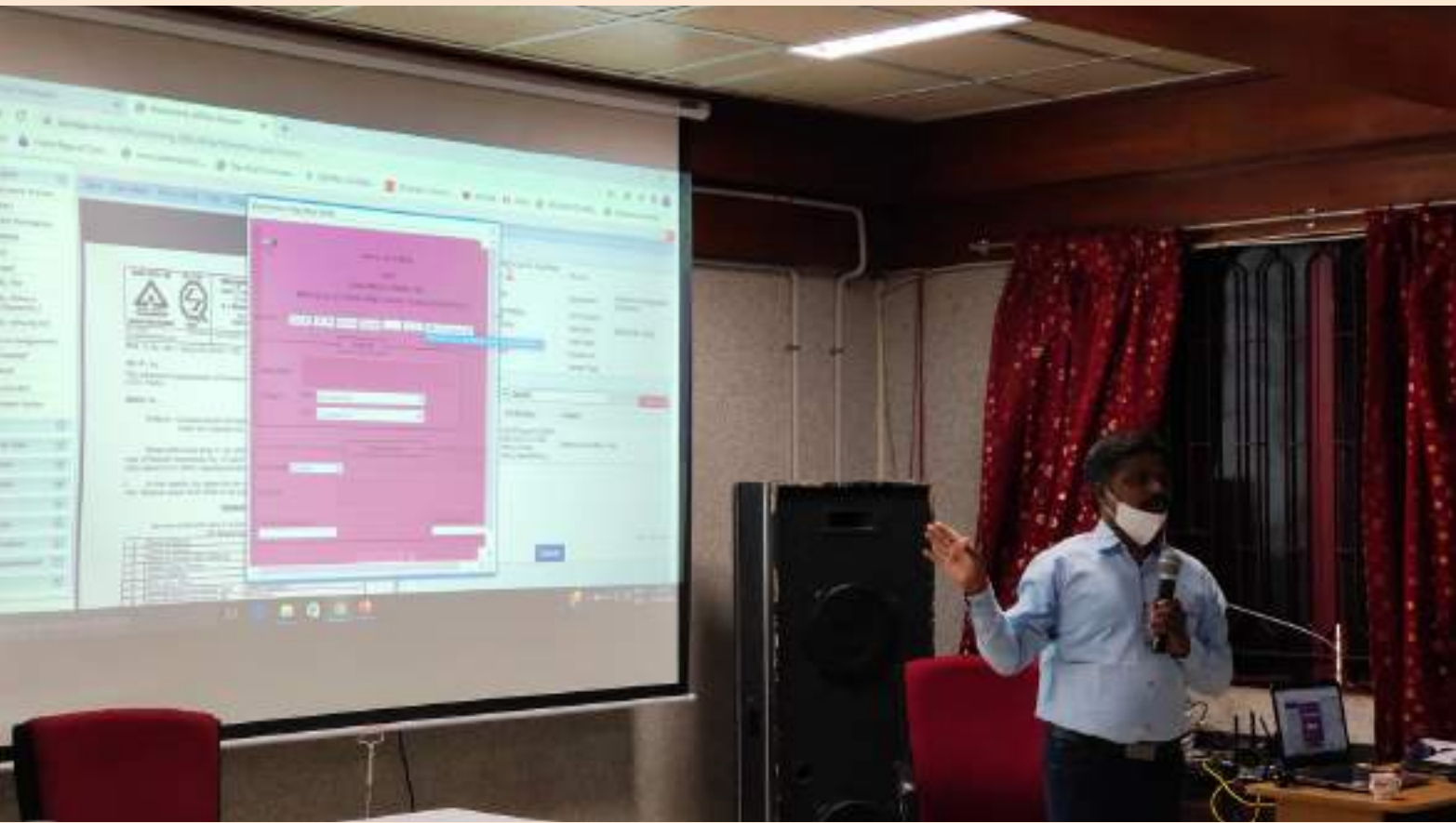
पिन्दू कुमार, निरीक्षक,
सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय तिरुच्चिरापल्ली।

कोविड 19 विश्वमारी मेरा अनुभव

कहते हैं कि कोई भी अनुभव चाहे छोटा हो या बड़ा, अच्छा हो या बुरा अगर व्यापक हो तो उसे बाँटना चाहिए। इससे या तो हमें सीख मिलती है या एक सरल मार्ग। किसी भी इंसान की वास्तविक परीक्षा उसकी आरामदायक परिस्थितियों में नहीं बल्कि चुनौतीपूर्ण समय में होती है। कोविड 19 भी एक वैश्विक महामारी के रूप में चुनौतीपूर्ण समस्या बन खड़ा हुआ है। इस संकटकालीन विषम परिस्थिति में पूरा विश्व और उसके संगठन, चाहे संगठनात्मक हो या व्यक्तिगत, सरकारी हो या निजी सभी स्तर के नेतृत्व अपनी अपनी क्षमता के लिटमस टेस्ट से गुजर रहे हैं। अगर हम अपने देश की बात करें तो भारत का नेतृत्व पूरे विश्व के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है जिससे भारत की विश्व नेतृत्व करने की छवि उभर कर सामने आई है। जहाँ एक ओर इस विकट संकट की घड़ी में देश की बहुसंख्यक आबादी सरकार द्वारा लगाए गए जनता कर्फ्यू तथा अनिवार्य समयबद्ध लॉकडाउन के नियमों एवं निर्देशों का पालन कर रही थी वहीं दूसरी ओर देश की कुछ आबादी इसे सफल बनाने की जद्दोजहद में स्वास्थ्य एवं सुरक्षा संबंधी सेवा के लिए समर्पित थी। मुख्य सेवाओं में प्रशासनिक तंत्र, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा तंत्र, बैंक तंत्र, डाक तंत्र, एवं सीमा शुल्क विभाग की सेवाएं सर्वोपरि हैं।

सीमा शुल्क विभाग ने इस विश्वमारी के चुनौतीपूर्ण समय में एक सराहनीय एवं निरंतर कार्य (24x7) के द्वारा दवाइयाँ, चिकित्सा उपकरण एवं सामग्री, खाद्य सामग्री एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं के आयात-निर्यात की अविलंब सेवा प्रदान की है तथा न सिर्फ अपने देश को बल्कि मित्र देशों को भी आर्थिक एवं नैतिक मदद प्रदान की है। वंदे भारत मिशन के अंतर्गत भारत सरकार का विदेशों में फसे भारतीयों को वापस लाने का उत्कृष्ट कार्य अपने नागरिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा संबंधी हितों की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जहाँ समाज, देश एवं संभवतः पूरा विश्व इस कोविड 19 विश्वमारी के दौर से गुजर रहा था, वहीं मैं अपने घर-परिवार एवं मित्रों से हजारों किलोमीटर (2500KM) दूर डर के माहोल में जनता कर्फ्यू एवं अनिवार्य समयबद्ध लॉकडाउन से चिंतित था। घर में बूढ़े माँ-बाप की देखभाल और नौकरी जो घर से बहुत दूर है, की जिम्मेदारी, और किसी अनहोनी की आशंका संबंधी बातें और फिर यातायात के सुगम साधन का अभाव इन्हीं सब उधेड़बुन परिस्थितियों में सुबह से शाम होने लगी थी। इस अनुभव को याद करने से दिल आज भी उद्वेलित हो उठता है लेकिन सरकार की चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं प्रशासनिक और अन्य जरूरी सेवाओं के साथ-साथ आदेश एवं निर्देश तथा अन्य प्रेरक एवं प्रोत्साहनपूर्ण प्रभावी कार्य मेरे मन को शांत और खुश करने लगे थे और अब मैं निश्चित हूँ।

श्री म. सरवण कुमार, उपायुक्त ई.ऑफिस के बारे में अधिकारियों को प्रशिक्षण देते हुए





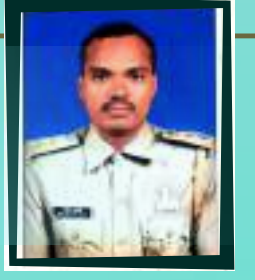
संकलित और अनूदित – एम. राजराजेश्वरी,
सहायक निदेशक (रा.भा.)

स्वतंत्रता संग्राम की अकीर्तित वीरांगना – कुयिली

अंग्रेज़ों के विरुद्ध चलाए गए स्वतंत्रता संग्राम में कई ऐसे सेनानी हैं जिनके नाम विख्यात नहीं हुए हैं। इनमें से एक है कुयिली नाम की एक युवती। तमिलनाडु राज्य के कई जगहों को अपने कब्जे में लेते हुए आगे बढ़ते-बढ़ते अंग्रेज़ों ने शिवगंगै को भी अपने कब्जे में ले लिया। शिवगंगै को अंग्रेज़ों के कब्जे से छुड़ाने के लिए रानी वेलुनाच्चियार लगातार लड़ रही थी। आठ साल बाद चिन्न मरुदु, पेरिय मरुदु और रानी वेलुनाच्चियार, तीनों ने मिलकर युद्ध शुरू किया। वेलुनाच्चियार के नेतृत्व में महिलाओं का एक सैन्य-दल गठित हुआ। उसमें अठारह साल की कुयिली भी थी। एक रात जब दुश्मन लोग वेलुनाच्चियार को मारने के लिए आए, तो कुयिली ने उनके खिलाफ लड़कर वेलुनाच्चियार की जान बचा ली। उससे प्रभावित होकर वेलुनाच्चियार ने कुयिली को अपना अंगरक्षक बना लिया।

कुछ साल बाद वेलुनाच्चियार के सैनिकों और अंग्रेज़ों के बीच युद्ध छिड़ गया। युद्ध में जीतने के लिए कुयिली ने एक योजना बनायी। अंग्रेज़ों ने एक जगह पर शस्त्र इकट्ठे कर रखे थे। कुयिली अपने पूरे शरीर में घी का लेपन करके हाथ में मशाल लेकर उस शस्त्रागार में कूद गई। बस, वहाँ इकट्ठे सारे शस्त्रास्त्र में विस्फोट हुआ और वे नाश होकर बिखर गए। सारे शस्त्रों को इस प्रकार खो देने से अंग्रेज़ों को निराश होकर लौटना पड़ा। शिवगंगै वेलुनाच्चियार के कब्जे में आ गया। कुयिली आग में जलकर राख बन गयी। अगर कुयिली ने शस्त्रों का नाश नहीं किया तो उस युद्ध में शिवगंगै को जीत लेना असंभव था। कुयिली के त्याग के बारे में जानकर वेलुनाच्चियार और उनके सैनिक रो पड़े। कुयिली का यह काम संसार का प्रथम आत्मघाती हमला कहा जा सकता है।

वाह रे ज़माने !



नवलेश प्रजापति , निरीक्षक

वाह रे ज़माने ! तूने हद कर दी।
आज तूने माँ मोहताज कर दी।
पाल-पोष बड़ा किया,
लाड़-प्यार खूब किया।
अपना पेट काट-काट,
लाड़ले को खूब दिया।
पेट की बुझाने आग,
देख रही ताक-ताक।
हक से माँग भी सके,
ये हिम्मत रही न आज।
आज वही माँ मोहताज हो गई
बीबी कल आई सरताज हो गई।

चलने में काँपे तन,
बैठी माँजे बर्तन।
बोझिल-बोझिल मन,
आँसू से भरे नयन।
कान आज तरसते हैं,
सुनने मीठे दो बचन।
पूछता नहीं है हाल,
कोई हमदर्द बन।

दर्द जिसने सबके बाँटे,
वही, सिरदर्द बन गई।
वाह रे ज़माने! ये तो हद हो गई।

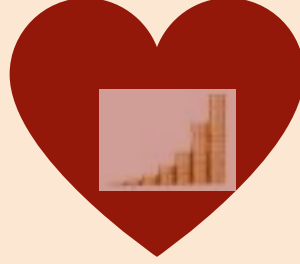
फिर भी सोचती है,
मेरे लाल पर न आए आँच।
भोला मेरा लाल है,
जमाने की न जाने साँच।
बैठे मेरा लाल साथ,
करूँ उससे मन की बात।
शिथिल हो गया है गात,
मन मेरा घबरात।
जिंदगी दी जिसने,
वह, तेरे दो पल को तरस गई।
वाह रे ज़माने! ये तो हद हो गई।



सुरेश कुमार, निरीक्षक

सुख की खोज

सब को चाहत सुख की जग में,
फिर क्यों इतना दुख है जग में।
सब कुछ करते सुख की खातिर,
फिर सुख टिकता क्यों नहीं आखिर।



सुख नहीं कोई वस्तु जगत की,
सुख-दुख तो हैं वृत्ति चित्त की।
ना इसका किंचित अभाव है।
सुख तो अपने मन का भाव है।

सुख टिकता नहीं, दुख मिटता नहीं
यह क्या राज है, कोई जानता नहीं।
ऐसा कौन है जो दुखी नहीं है
ऐसा कौन है जो पूर्ण सुखी है।

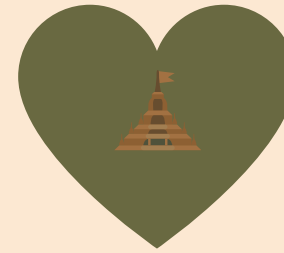


कोई सुखी होगा भविष्य में,
कोई सुखी था भूत काल में।।
सुखी हमेशा वही रहेगा
जो है मस्त हरेक हाल में।।

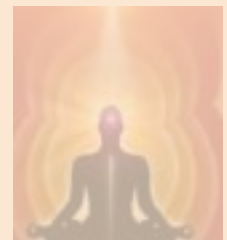
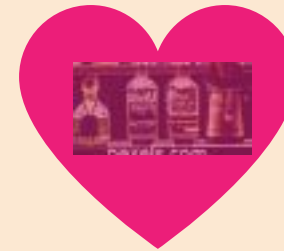
कोई ढूँढ़ता सुख संपत्ति में,
कोई दूसरों की विपत्ति में।
कोई ढूँढ़ता सुंदरता में,
कोई स्वाद की लोलुपता में।
कोई ढूँढ़े मधुर गीतों में
कोई ललनाओं को संगति में



सुख सपना, दुख बुलबुला,
दोनों हैं मेहमान।
दोनों बीतने दीजिए,
निज स्वरूप को जान।



कोई सुख ढूँढ़ रहा मंदिर में
कोई सुख ढूँढ़े मधुशाला में।
एक फकीरी में सुख ढूँढ़े,
दूसरा सुख ढूँढ़े हाला में।



12.01.2021 को कार्यालय परिसर में पोंगल मनाया गया।
पोंगल समारोह की झलकियाँ



पोंगल समारोह में सेवा संगम विद्यालय की छात्राओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया।
छात्राओं को को स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए डॉ उमा शंकर, मुख्य आयुक्त,





देवेन्द्र सिंह सिकरवार ,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सतर्कता, जागरूकता उन्नति का मूल

सतर्क रहने का गुण प्राणियों में प्राकृतिक रूप से विद्यमान है। इंसान ही नहीं पशु-पक्षी भी हमेशा सतर्क रहते हैं। जब-जब वे लापरवाह होते हैं तब-तब कुछ न कुछ खामियाजा भरना पड़ता है। शायद इसी लिए कहा जाता है "सावधानी हटी, दुर्घटना घटी"। अधिकतर देखा जाता है कि शुरू-शुरू में हम बहुत सावधान रहते किन्तु जब लम्बे अरसे तक सब कुछ ठीक चलता रहता है तो हम सावधानी कम कर देते हैं या फिर मान लेते हैं कि अब तक कुछ नहीं हुआ तो आगे भी कुछ नहीं होगा और परेशानी में पड़ जाते हैं। इसी सिलसिले में मुझे एक कहानी याद आ गई -

एक बुजुर्ग को बड़ा अजीब शौक था। वह लोगों से शर्त लगाया करता था कि पेड़ की सबसे ऊँची डाल तक चढ़ के दिखाओ और इनाम पाओ। एक नौजवान ने शर्त स्वीकार करते हुए चढ़ना शुरू किया और सबसे ऊँची डाल पर पहुँच गया जहाँ पर तनिक सी चूक मौत का कारण बन सकती थी। जब नौजवान ने ऊपर से बुजुर्ग की तरफ निहारा तो बुजुर्ग किसी व्यक्ति से बात करने में व्यस्त था उसका नौजवान की तरफ ध्यान ही नहीं था। नौजवान ने उतरना शुरू किया और जब वह काफी नीचे उतर आया और सोचने लगा कि अब वह सुरक्षित है तब बुजुर्ग ने नौजवान की तरफ देखा और कहा बेटा, जरा सँभल के उतरना। नौजवान सोचने लगा इस बुजुर्ग को थोड़ी-बहुत समझ है भी या नहीं। उतरते ही उसने बुजुर्ग से प्रश्न किया कि जब मैं सबसे ऊँची डाल पर था जहाँ बहुत सावधानी की जरूरत थी तब तो आपने मेरी तरफ देखा भी नहीं और जब मैं सुरक्षित स्थान तक उतर आया तब आप मुझे सावधान रहने की सीख दे रहे थे आपको थोड़ी बहुत समझ है भी या नहीं? बुजुर्ग ने कहा बेटा, मुझे दुनिया का अनुभव तुम से अधिक है। जब तुम बहुत ऊँचाई पर थे तब तुम्हें भय था और पूरी सावधानी बरत

रहे थे। उस वक्त तुम्हें सावधान करने की आवश्यकता ही नहीं थी। और जब तुमको लगा कि अब सुरक्षित स्थान पर हूँ तो तुम्हारी सावधानी कम हो गई थी जिससे चूक होने की संभावना बढ़ गई थी। इसलिए मैं ने तुम्हें सही समय पर सतर्क किया था। **सतर्कता एक सतत प्रक्रिया है जिसमें कहीं भी छूट की गुंजाइश नहीं है।**

सतर्कता का उत्कृष्ट उदाहरण सीमा पर तैनात सेना में देखा जा सकता है जहाँ दिन-रात सतर्कता बरती जाती है। एक चूक या एक व्यक्ति की चूक भी खतरनाक साबित हो सकती है। **इससे हम समझ सकते हैं कि सतर्क रहना सब की जिम्मेदारी है।** क्षेत्र अपने-अपने कार्य के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। अतः सरकारी मशीनरी के साथ-साथ पूरे समाज को भी सतत सतर्क रहने की आवश्यकता है। समाज को जागरूक रहने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। एक जागरूक समाज उत्कृष्ट संतति, महान वैज्ञानिक, बहादुर सैनिक, ईमानदार व्यापारी, उत्कृष्ट इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक आदि पैदा कर सकता है तथा एक महान राष्ट्र का सृजन कर सकता है।

अब प्रश्न उठता है कि समाज को किस विषय के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है? समाज को सच्चाई, ईमानदारी, मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक विरासत, अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता है क्योंकि जब-जब समाज में इन सब के लिए शिथिलता होती जाती है बुराइयाँ उत्पन्न होने लगती हैं। आमतौर पर हम सब इसको अपनाते हैं लेकिन जब बात अपने-पराए की आती है तो अपनों की बुराई में भी अच्छाई दिखाई देती है और विरोधी की अच्छाई में भी बुराई दिखने लगती है। इसी प्रकार अपने अधिकारों और दूसरों के कर्तव्यों पर ही नजर रहती है।

दूसरों का अधिकार सुरक्षित रखना भी हमारा कर्तव्य है, यह नजरिया यदि समाज में उत्पन्न हो जाए तो सारी समस्याओं के मूल पर ही प्रहार हो जाएगा। अच्छाई, सद-गुण भले ही दुश्मन में ही क्यों न हों, उन्हें यथोचित सम्मान मिलना ही चाहिए। मैंने एक घटना सुनी थी – जब कार्गिल युद्ध चल रहा था। भारतीय सेना जीत की ओर अग्रसर थी तब एक चौकी पर तैनात पाकिस्तानी सैनिक बेहद बहादुरी से लड़ रहा था और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक लड़ता रहा था। भारतीय सेना ने उसे मार गिराया तथा उसकी बहादुरी की कद्र भी की। भारतीय सेना ने एक कागज पर लिखा कि युद्ध में इस सैनिक ने बहुत ही बहादुरी का परिचय दिया है इसे माकूल सम्मान दिया जाए और वह कागज उसकी जेब

में रख दिया तथा शव दुश्मन के हवाले कर दिया। भारतीय सेना की दरियादिली की प्रशंसा दुश्मन के परिजनों को भी करनी पड़ी। उन्होंने कहा हमारा दुश्मन बहादुर है कोई बुज़दिल सेना ऐसा कार्य नहीं कर सकती। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हम अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए दूसरों के अधिकार के प्रति भी जागरूक रह सकते हैं। इससे हमारे गुणों में अभिवृद्धि होती है तथा यश की प्राप्ति होती है। संक्षेप में, हम सब अपने-अपने कर्तव्य और दूसरों के अधिकारों के प्रति भी जागरूक रहें यही उन्नति का मूल मंत्र है। किसी ने ठीक ही कहा है **“जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है।”**

माँ

मनपसंद व्यंजन पाकर बच्चा बहुत खुश हुआ और अपने नन्हे झूठे हाथों से माँ को भी खिला दिया। माँ ने भी खा लिया। बच्चा बोला माँ तू कितनी अच्छी है।

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब तुझे बहुत से अच्छे-अच्छे व्यंजन दूँगा।

माँ चुप रही।

बच्चा फिर बोला जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तब बहुत-सारा धन कमाऊँगा और सब तुझे दे दूँगा।

माँ कुछ नहीं बोली।

बच्चा फिर बोला जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो अपना सब कुछ तुझे दे दूँगा।

माँ अब भी चुप रही।

बच्चा बोला माँ मेरे शरीर की चमड़ी भी तेरे काम आ जाए तो वह भी तुझे दे दूँगा।

माँ सिर्फ मुस्कराई।

बच्चा बोला माँ ऐसे क्यों हँस रही हो?

माँ बोली, बेटा तेरी चमड़ी भी तेरी नहीं है वह भी मेरे ही अंगों से बनी है।

बच्चा बोला माँ तू मेरी है। माँ ने हृदय से लगाते हुए कहा, हाँ लाल तू मेरा है।

माँ सचमुच कितनी महान है!



कोरोना को हराना है

सबका यही नारा है,
कोरोना को भगाना है।
अब इसको हराना है,
और फिर से घूमने जाना है।
पूरी दुनियाँ में इसकी चर्चा है,
वैज्ञानिक ढूँढ़ रहे इसका इलाज है ।
मास्क पहनना हाथ धोना,
दो गज दूरी बनाए रखना है।
डरना नहीं, रुकना नहीं,
इससे डटकर सामना करना है।
कोरोना को हराना है!
कोरोना को हराना है।



आर. एस. अरुण प्रकाश
पुत्र श्री एच. राजशेखर, भा.रा.से.
सहायक आयुक्त

कोरोना बैरी कुछ भी करन नहीं देइ



देवेन्द्र सिंह सिकरवार ,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कोरोना बैरी कुछ भी करन नहीं देइ।
हाथ गल गए धोते-धोते
पीठ अकड़ गई सोते-सोते
बाहर निकलें भी तो कैसे?
पुलिस के डण्डे सोटा जैसे।
सोचत ही भय होय,
कोरोना बैरी कुछ भी करन नहीं देइ॥

मुँह में लगा मुसीका भारी।
फीकी पड़ गई दुनियादारी॥
मौँजों के मेले लगते थे।
मिल-जुल यार गले लगते थे॥
अब, छूअन तलक नहीं देइ,
कोरोना बैरी कुछ भी
करन नहीं देइ॥

परम पवित्र बन गई वाइन।
सुंदर रूप धरा ज्यों डाइन॥
अब तक दाल गली ना जिस घर।
पहुँची वहाँ सेनीटाइजर बन कर॥
जब तक लगे नहीं तन ऊपर,
स्वच्छ कोई ना होय,
कोरोना बैरी उलटफेर कर देइ॥

सपनेहु जो हो जाए खाँसी।
सब घर में छा जाए उदासी॥
भोर में जो सपने आते हैं।
वे सच्चे भी हो जाते हैं॥
कहीं, सपना सच नहीं होय
कोरोना बैरी भ्रम उपजावत एहि॥

लॉक हो गई दुनिया सारी
बंद हुई सब मोटर-गाड़ी॥
बस, यमराज की कढ़ी सवारी।
ना जाने किस की है बारी॥
मन ही मन भय होय,
कोरोना बैरी कुछ भी करन नहीं देइ॥

जगह-जगह दो-चार को मारे।
बाकी मर जाएं डर के मारे॥
भय त्यागें सावधानी बढ़ाएं।
सोशल डिस्टेंसिंग अपनाए॥
तो, बाल न बाँका होय।
कोरोना बैरी खुद ही दुर्बल होय॥



पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ

दिनेश प्रजापत, निरीक्षक

एक समय की बात है। एक छोटे से गाँव में राहुल नाम का एक लड़का रहता था। गाँव नदी के किनारे पर बसा हुआ था। राहुल रोज अपने मित्रों से साथ नदीतट पर खेलने जाया करता था। खेलते-खेलते उसके साथी नदी के किनारे पर गंदगी फैला देते थे और नदी के पानी को प्रदूषित कर देते थे। यह बात राहुल को बिलकुल पसंद नहीं आती थी। वह बच्चों को समझाता था कि नदी हमारी माँ जैसी होती है। इससे पूरे गाँव को पेयजल मिलता है, फसल की सिंचाई होती है। जब नदी हमारा इतना खयाल रखती है तो हमें भी नदी को साफ-सुथरा रखना चाहिए। उसके साथी उसकी मजाक उड़ाते थे किंतु राहुल अपने इरादे पर अडिग रहता था। राहुल प्रति दिन नदीतट को साफ करता और अपने घर से फलों के बीज एकत्रित करके सुरक्षित जगह पर मिट्टी में दबा देता। अनुकूल मौसम आने पर बीज अंकुरित हो गए और देखते ही देखते बीज पौधों में परिवर्तित हो गए। अब राहुल के मित्रों को भी राहुल की सीख कुछ-कुछ समझ में आने लगी थी। उन्होंने भी राहुल का साथ देना शुरू कर दिया। सभी बच्चे नदीतट पर मौज-मस्ती करते और खेलने के बाद नदी से पानी लाकर पौधों की सिंचाई कर देते। समय बीतता गया, राहुल अब बड़ा हो गया और उसके द्वारा बोए गए बीजों ने भी अब वृक्ष का रूप ले लिया था।

इससे उत्साहित होकर गाँववालों ने नदी के किनारे-किनारे, दूर-दूर तक वृक्षारोपण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि नदीतट सुंदर एवं मजबूत हो गया, लोगों को गर्मियों में मधुर छाँव मिलने लगी। वर्षाऋतु में वर्षा भी खूब होने लगी। वातावरण में ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा हो गई। लोगो का तन स्वस्थ एवं मन प्रसन्न रहने लगा। गाँव की यह बात दूर-दूर तक फैल गई। कुछ पत्रकारों ने गाँव की प्रशंसा में लिख दिया तो गाँव की प्रसिद्धि और बढ़ गई। धीरे-धीरे सैलानी वहाँ आने लग गए और गाँववालों की

आमदनी का स्रोत बढ़ गया। अब खेती के लिए भी पानी की कमी नहीं पड़ती थी। उसी नदी के दूसरे तट पर एक अन्य गाँव था। उस गाँव में राहुल जैसा कोई व्यक्ति नहीं था। वे नदी का खूब दोहन करते थे। नदी की बालू निकाल-निकाल कर बेचा करते थे। जिससे नदी में गाँव की तरफ कई बड़े-बड़े गड्डे हो गए थे। नदी का किनारा लगभग समाप्त हो गया था। नदी का बहाव भी उस गाँव की तरफ अधिक हो गया था। उस गाँव के लोग नदी के रख-रखाव को महत्व नहीं देते थे। एक साल अधिक वर्षा हुई तो नदी में जल का स्तर बढ़ने लगा। धीरे-धीरे नदी का आकार बढ़ने लगा। राहुल का गाँव तो मजबूत किनारे से सुरक्षित था नदी का पानी दूसरे किनारे को काटता हुआ गाँव में प्रवेश कर गया परिणाम स्वरूप गाँव में भारी तबाही हुई। उस तरफ के सभी खेत बर्बाद हो गए। खेतों की उपजाऊ मिट्टी नदी के बहाव में बह गई। गाँव की मवेशी खत्म हो गई। गाँव का संपर्क देश के अन्य हिस्सों से कट गया। महीनों तक गाँव में पानी भरा रहा जिससे कई बीमारियाँ फैल गयीं। कुल मिलाकर गाँव में जान-माल का भारी नुकसान हुआ। अब गाँववालों को राहुल की छोटी सी शुरूआत के पीछे राहुल की दूरदर्शिता समझ में आ गयी और उसका व्यावहारिक रूप भी देखने को मिल गया था। पूरे गाँववालों ने राहुल की भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपनी कृतज्ञता जताई।

इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करने वाले देर सवेर प्राकृतिक आपदाओं के शिकार होते हैं तथा नष्ट होजाते हैं। प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर, संतुलन बनाकर चलने वाले लोगों की प्रकृति पोषक एवं संरक्षक बन जाती है। आओ हम सब मिल कर पेड़ लगाएं और अपने पर्यावरण को बचाएं। धन्यवाद





सचिन कुमार, निरीक्षक

भिक्षुक की सीख

यह कहानी उन दिनों की है जब मैं अपनी स्नातकोत्तर के द्वितीय वर्ष का छात्र था। उन दिनों में किराए का कमरा लेकर अपने दोस्त के साथ रहा करता था। अकसर हम लोग सुबह के समय चाय पीने के लिए पास में ही एक टपरी के पास जाया करते थे। उसी टपरी के सामने एक मोबाइल फोन की दुकान थी। एक भिक्षुक रात को उस दुकान के सामने लेटा करता था। दुकान के मालिक को उसका वहाँ लेटे रहना बिलकुल पसंद नहीं था। दुकान-मालिक का रोज सुबह आना और भिक्षुक पर गालियों की बरसात करना तो आमबात हो गई थी। लेकिन भिक्षुक भी वहाँ से हटने का नाम नहीं लेता था। तब दुकानदार ने उस पर हाथ उठाना भी शुरू कर दिया। फिर भी भिक्षुक रोज रात को उसकी दुकान के सामने सो जाया करता था। अब दुकानदार ने परेशान होकर भिक्षुक को अमानवीय यातना देना शुरू कर दिया। कभी उसके भोजन को छीनकर फेंक देता तो कभी उसमें थूक दिया करता था। हमें भी लगने लगा कि यह तो रोजमर्रा का ड्रामा है। एक दिन तो दुकानदार अपनी हद पार कर भिक्षुक को डंडे से पीटने लग गया। वहाँ पर मौजूद लोगों ने भिक्षुक को बचाया और दुकानदार को समझा-बुझा कर शांत किया। इस घटना के कुछ दिन बाद मैंने अपना कमरा बदल लिया। कुछ समय व्यतीत होने पर मैं अपने पुराने कमरे पर अपने दोस्तों से मिलने गया। अगले दिन मैं दोस्तों के साथ फिर उसी चाय की दुकान पर गया। वहाँ सब कुछ पहले जैसा ही था बस भिक्षुक कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने मजाक करते हुए दोस्तों से कहा कि लगता है दुकानदार की समस्या हल हो गई है। दोस्तों ने गंभीरता पूर्वक कहा कि बेचारा भिक्षुक अब इस दुनिया में नहीं रहा। यह सुनकर मुझे बड़ा अजीब लगा। मैंने पूछा कैसे मर गया? दोस्तों ने बताया कि एक रात कुछ चोर

मोबाइल की दुकान पर लूटने के इरादे से आए थे। जब उन्होंने दुकान के शटर को तोड़ने की कोशिश की तो भिक्षुक ने उनको रोका। चोरों ने भिक्षुक को धक्का मारकर दूर कर दिया। भिक्षुक उठा और चिल्लाकर बोला "अरे! हट्टे-कट्टे हो और चोरी करते हो तुमको शर्म नहीं आती" मेरे रहते हुए तुम इस दुकान का तिनका भी नहीं ले जा सकते हो। चोर बोले दूसरों के टुकड़ों पर पलने वाले भिखारी तू हमें समझाएगा? भीख माँगने से भी तुच्छ काम कोई हो सकता है क्या ? तुझसे अधिक दीन-हीन, दरिद्र निकृष्ट, निकम्मा और क्षुद्र व्यक्ति आज तक हमने नहीं देखा। अपनी जान की खेरियत चाहता है तो भाग जा यहाँ से। भिक्षुक बोला हाँ मैं दीन-हीन, दरिद्र हूँ। यह मेरी मजबूरी है क्योंकि मैं विकलांग पैदा हुआ हूँ। किंतु मैं चोर नहीं हूँ। मैं मांग कर खा लेता हूँ या भूखा सो जाता हूँ किन्तु चोरी नहीं करता हूँ क्योंकि मैं भिक्षा माँगने से अधिक चोरी करने को ज्यादा निकृष्ट समझता हूँ। तुम लोगों को मुझसे भी अधिक तुच्छ व्यक्ति देखना है तो खुद को देख लीजिए। ऐसा कह कर वह भिक्षुक दुकान के शटर के आगे खड़ा हो गया। बौखलाए हुए चोरों ने भिक्षुक पर चाकू से प्रहार कर दिया। जब शोरगुल हुआ तो हड़बड़ाकर चोर दुकान छोड़ कर भाग गए। अधिक रक्तस्राव की वजह से भिक्षुक की मौत होई। इस घटना की जानकारी दुकानदार को CCTV कैमरा से प्राप्त हुई। तब से वह दुकानदार उस भिक्षुक की यादगार में हर रविवार को गरीबों में भोजन वितरण करता है।

मुख्य आयुक्त, डॉ उमा शंकर द्वारा 12.01.2021 को सीमा शुल्क (निवारक), आयुक्तालय तिरुच्चिरापल्ली के केन्द्रीय आसूचना एकक के नवीकरण के उपरांत उद्घाटन



बाएं से दाएं - सर्वश्री डी अनिल, आयुक्त, तिरुच्चिरापल्ली, डॉ उमा शंकर, मुख्य आयुक्त, जे मुहम्मद नवफल, अपर आयुक्त एवं वी. एस. वेंकडेश्वरन, संयुक्त आयुक्त